How to Cite:

Balaji Naik.L **(2007). डॉ.धर्मवीर भारती के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव**

International Journal of Economic Perspectives,*1*(1), 40-44.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

डॉ.धर्मवीर भारती के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव

Balaji Naik.L
Research Scholar, Departmentof Hindi, Bangalore University, Bangalore- 560056

भूमिका

अरविन्द दर्शन अपनी व्यक्त विचार संपन्नता के कारण विश्व दर्शन बनता जा रहा है । आधुनिक हिन्दी काव्य पर इस दर्शन का गहरा प्रभाव दृग्गोचर होता है । संसार के प्रायः सन साठ तक के काव्य पर इस दर्शन ने अपना प्रभाव का व्यापक रूप में प्रसार किया है । इसके उपरान्त जीवित स्वातंत्र्योत्तर एवं स्वातंत्र्य पूर्व कवियों ने इस दर्शन से व्यापक प्रेरणा ग्रहण की है । उनके काव्य में वर्णित आत्मा–परमात्मा का संबंध, परमसत्ता के मिलन के लिए आत्मा की अकुलाहट, दार्शनिक चेतना में मानवीय चिंतन, परमसत्ता की कृपा का विस्तार आदि तत्वों पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव पड़ा हैं ।

डॉ.धर्मवीर भारती स्वातंत्र्योत्तर से कविता का प्रणयन करते आये हैं पर साठोत्तर युग में प्रकाशित उनके काव्य पर अरविन्द दर्शन का यद्किंचित प्रभाव प्ड़ा है । आत्मा और परमात्मा की एकता के वर्णन में यह प्रभाव स्पष्ट दृग्गोचर होता है ।

'कनुप्रिया' काव्य में अरविन्द दर्शन

कनुप्रिया काव्य में प्रेम और रागात्मकता का वर्णन अधिक किया गया है । कनु अर्थात कृष्ण और कनुप्रिया अर्थात राधा के संभाषणों के द्वारा कवि अपने भाव को व्यक्त करते हैं । अरविन्द ने पौराणिक पात्रों के माध्यम से प्रतीकात्मकता के धरातल पर यत्र–तत्र अपने दार्शनिक विचार व्यक्त किये हैं । इस अभिव्यक्ति का प्रभाव डॉ.धर्मवीर भारती पर पडा है ।

दार्शनिक प्रतीकात्मकता

'कनुप्रिया' काव्य में 'कनु' परमसत्ता का प्रतीक है । 'कनुप्रिया' अर्थात राधा आत्मा का प्रतीक है । कनुप्रिया अपने प्रियतम कृष्ण की छवि प्रकृति में सर्वत्र निहारती है अर्थात आत्मा परमात्मा के दर्शन के लिए आतुर कातुर होती है । परमसत्ता के वियोग को वह सह नहीं पाती और उसी में लीन होने की इच्छा प्रकट करती है ।

पवित्र – समर्पण भावना

कृष्ण और राधा के चरित्र में पवित्र समर्पण भावना दिखाई देती है । राधा, कृष्ण की माया शक्ति है और श्री कृष्ण परमसत्ता, आत्मा के प्रति परम सत्ता का प्रेम शाश्वत है । कृष्ण इस काव्य में राधा

© 2007 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Balaji Naik.L
Submitted: 18 October 2007, Revised: 09 November 2007, Accepted: 27 December 2007

How to Cite:
Balaji Naik.L **(2007). डॉ.धर्मवीर भारती के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव**
International Journal of Economic Perspectives,*1*(1), 40-44.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

के प्रति परम प्रेम भावना व्यक्त करते हैं । अरविन्द दर्शन में निहित समर्पण भावना राधा–कृष्ण के प्रेम में दृग्गोचर होती है । कृष्ण, राधा से कहते हैं कि यह निखिल सृष्टि कृष्ण का ही लीलातन है और यह तुम्हारे आस्वादन के लिए है । समस्त सृष्टि परमात्मा की लीला–विस्तार है । परमात्मा चाहते हैं कि लीला विस्तार से समस्त आत्माएँ आनंद रस प्राप्त करें । वे कहते हैं कि –

अगर यह निखिल सृष्टि
मेरा ही लीलातन है
तुम्हारे आस्वादन के लिए ।[१]

धर्मविर भारती की इस भावाभिव्यक्ति में अरविन्द दर्शन के लीाला विस्तार तत्व का प्रभाव दृग्गोचर होता है ।

सृष्टि में परमप्रिय के दर्शन

कवि धर्मवीर भारती के काव्य में प्रेम तत्व को प्रधान स्थान मिला है । राधा कृष्ण तथा महाभारत के पात्रों को प्रतीक के रूप में ग्रहण कर वे अपने दार्शनिक विचार व्यक्त करते हैं। अरविन्द समस्त सृष्टि में परमात्मा की चेतना का विस्तार देखते हैं और समस्त सृष्टि में उसके दर्शन करते हैं । अरविन्द दर्शन के इस दार्शनिक तत्व का प्रभाव डॉ.धर्मवीर भारती के काव्य में दिखाई देता है । राधा आत्मा है वह अपने प्रियतम की छवि सृष्टि में सर्वत्र देखती है । वह कहती है कि –

और अगर ये सारे रहस्य मेरे हैं
और तुम्हारा संकल्प मैं हूँ
और तुम्हारी इच्छा मैं हूँ
और इस तमाम सृष्टि में मेरे अतिरिक्त
यदि कोई है तो केवल तुम, केवल तुम,
केवल तुम
तो मैं डरती किस से हूँ मेरे प्रिय ![२]

राधा कहती है कि इस समस्त सृष्टि में तुम ही तुम हो, तो मैं तुम में हूँ । कृष्ण के सारे रहस्य राधा में निहित है अर्थात परमात्मा अपना रहस्य अत्मा के द्वारा प्रकट करते हैं और परम की इच्छा आत्मा ही है । इस विश्व सृष्टि में परम सत्ता के अतिरिक्त और कोई है तो आत्मा ही है और आत्मा के अतिरिक्त अन्य सत्ता परमात्मा ही है । आत्मा–परमात्मा के अनन्य संबंध का विश्लेषण कनुप्रिया काव्य में कवि धर्मवीर भारती ने अरविन्द दर्शन के धरातल पर किया गया है । आत्मा

© 2007 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Balaji Naik.L
Submitted: 18 October 2007, Revised: 09 November 2007, Accepted: 27 December 2007

How to Cite:
Balaji Naik.L **(2007). डॉ.धर्मवीर भारती के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव**
International Journal of Economic Perspectives,*1*(1), 40-44.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

मानती है कि संसार में सर्वत्र एक ही सत्ता है और वह है परमसत्ता । अतः वह किसी से नहीं ड़रती ।

सर्वत्र आत्मा का विस्तार

इस काव्य में स्वच्छंदवाद के धरातल पर दार्शनिक चेतना का वर्णन किया गया है । अपने स्थिर रूप में आत्मा यह अच्छी तरह जानती है कि उसका विस्तार सर्वत्र है । कनुप्रिया के कथन में इस तथ्य का समुद्‌घाटन हुआ है ।

और अगर यह चन्द्रमा मेरी उँगलियों के
पोरों की छाप है
और मेरे इशारे पर घटता और बढ़ता है
और अगर यह आकाशगंगा मेरे ही
केश–विन्यास की शोभा है
और मेरे एक इंगित पर इस के अनन्त
ब्रह्माण्ड अपनी दिशा बदल
सकते हैं
तो मुझे ड़र किस से लगता है
मेरे बन्धु ![३]

ऐसा कौन–सा स्थान हैं?जहाँ आत्मा का विस्तार नहीं हुआ हो । चंद्रमा में उसकी ऊँगलियों की छाप है और आत्मा के इशारे पर चाँद बढ़ता है और घटता है । यह आकाशगंगा राधा अर्थात आत्मा का केश विन्यास है । उसके एक इशारे पर ब्रह्मांड अपनी दिशा बदल सकता है, तो मैं किससे डँरू ? अरविन्द दर्शन का आत्मा–विस्तार तत्व का सुन्दर निरूपण इस कविता में हुआ है ।

जन्म जन्मान्तरों में विश्वास

अरविन्द दर्शन में जन्म जन्मान्तारों का तात्विक विवेचन हुआ है । आत्मा और परमात्मा का संबंध एक जन्म का नहीं बल्कि जन्म जन्मान्तरों का है । इन दोनों का संबंध शाश्वत है,जिसका आदी और अंत नहीं है । 'कनुप्रिया' काव्य में राधा आत्मा के शाश्वत तत्व का निरूपण करती हुई कहती है कि कृष्ण और राधा का संबंध एक जन्म का नहीं कई जन्मों का है ।

© 2007 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Balaji Naik.L
Submitted: 18 October 2007, Revised: 09 November 2007, Accepted: 27 December 2007

How to Cite:
Balaji Naik.L **(2007). डॉ.धर्मवीर भारती के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव**
International Journal of Economic Perspectives,1(1), 40-44.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

और जन्मान्तारों की अनन्त पगडण्डी के

कठिनतम मोड पर खडी हो कर

तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हूँ ।[४]

परमप्रिय की इच्छा के अनुसार वह (आत्मा) उनमें (परमामा) लीन होती और उनकी इच्छा के अनुसार वह पुनः जन्म ग्रहण करती है । डॉ.धर्मवीर भारती जी इस काव्य में जन्म–जन्मान्तरों के संबंध के धरातल पर आत्मा के शाश्वत तत्व का निरूपण करते हैं । राधा कहती है कि जन्मान्तरों की अनंत पगडण्डी के मोड पर खडी होकर कृष्ण की प्रतिक्षा कर रही है अर्थात आत्मा अंततोगत्व परमात्मा में लीन होना चाहती है । इनका संबंध एक जन्म का नहीं बल्कि अनेक जन्मों तक व्याप्त है । आत्मा तो सदा परमात्मा में तल्लीन हो जाना चाहती है पर उसका महा–मिलन परमप्रिय की इच्छा पर निर्भर है ।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि 'कनुप्रिया' के कवि डॉ. धर्मवीर भारती पर महर्षि अरविन्द के सत्य दर्शन का प्रभाव पडा है । अरविन्द दर्शन के कथिपय दार्शनिक सिद्धान्तों से ही डा.धर्मवीर भारती ने प्रभाव ग्रहण किया है । प्रेम और अनुराग के गायक कवि धर्मवीर भारती ने रागात्मकता से संबंधित तत्व को स्वर प्रदान किया है । प्रस्तुत विवेचन में यह निरूपित किया गया है कि कनुप्रिया तथा कनु अर्थात राधा और कृष्ण के प्रेम का वर्णन डॉ. धर्मवीर भारती ने वैश्विक धरातल पर प्रस्तुत करते हैं । यह अंश भी निरूपित है कि कनुप्रिया आत्मा का प्रतीक और कनु परमसत्ता का । कवि ने आत्मा और परमात्मा के शाश्वत संबंध का निरूपण राधा और कृष्ण के माध्यम से किया गया है । यह तथ्य भी इसमें समुद्घाटित है कि आत्मा अनादी अनंत काल से परमात्मा का अन्वेषण करती है और अंत में परमात्मा की कृपा से आत्मा परमसत्ता में लीन होती है ।

परमसत्ता सर्वव्यापी है, उसी प्रकार आत्मा भी दिगदिगंतो में फैलती जाती है उसकी पहुँच दूर–दूर तक है । जब आत्मा परमात्मा का ही अंश हैं तो परमात्मा के सभी गुण आत्मा में भी विद्यमान है । अरविन्द दर्शन के इस तत्व से प्रभावित कनुप्रिया कहती है कि मेरे केश नभ विस्तृत प्रांगण में व्याप्त है । मेरे मुखचंद्र की छवि चंद्रमा तक फैली हुई है । समूचे ब्रह्माण्ड में मेरे अस्तित्व का संप्रसरण है । इस ब्रह्माण्ड में तुम ही तुम हो और मैं ही मैं हूँ। हम दोनों के सिवा इस संसार में कुछ नहीं है । दर्शन के इस निगूड तत्व को इस काव्य में बहुत ही सुन्दर ढंग से व्यक्त किया गया है ।

© 2007 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Balaji Naik.L
Submitted: 18 October 2007, Revised: 09 November 2007, Accepted: 27 December 2007

How to Cite:

Balaji Naik.L **(2007). डॉ.धर्मवीर भारती के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव**

International Journal of Economic Perspectives,*1*(1), 40-44.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

संदर्भ सूची

1. आदिम भय (कनुप्रिया) – धर्मवीर भारती, पृ.४५
2. आदिम भय (कनुप्रिया) – धर्मवीर भारती, पृ.४७
3. आदिम भय (कनुप्रिया) – धर्मवीर भारती, पृ.४७ & ४८
4. समापन (कनुप्रिया) – धर्मवीर भारती, पृ.८१

*****

© 2007 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: Balaji Naik.L

Submitted: 18 October 2007, Revised: 09 November 2007, Accepted: 27 December 2007